जैन

पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

आत्मानुभूति के साथ-साथ सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की सम्यक् पहिचान भी सम्यक्त्व प्राप्ति के लिए अनिवार्य है।

ह क्रमबद्धपर्याय, पृष्ठ : 58

वर्ष : 28, अंक : 3 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मई (प्रथम)2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

महावीरस्वामी की जन्म जयन्ती पर अनेक कार्यक्रम

जयपुर (राज.) : यहाँ राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में भगवान महावीरस्वामी की जन्मजयन्ती पर आयोजित पंच दिवसीय कार्यक्रमों में दिनांक 22 अप्रैल को प्रात: विशाल जुलूस शहर के विविध मार्गों से होता हुआ रामलीला मैदान पहुँचा। जहाँ आचार्य विशदसागरजी, आचार्य महाप्रज्ञ एवं मणिप्रभसागरजी का विशेष उद्‌बोधन हुआ। रात्रि में विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं पूर्वसंध्या पर राजस्थान चैम्बर भवन में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

महावीर जयन्ती के दिन प्रात: श्री टोडरमल स्मारक भवन में विशेष पूजन के पश्चात् झण्डारोहण किया गया। पूर्व संध्या पर श्री दि. जैन महिला मण्डल, बापूनगर संभाग की ओर से रात्रि में अक्षय निधि कार्यक्रम का विशेष आयोजन किया गया।

आदर्शनगर स्थित दिगम्बर जैन मुलतान मंदिर में श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला के बालकों एवं महिलाओं द्वारा विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये, जिसमें महिलाओं द्वारा मंचित **परिणाम बदल गया** नाटक विशेष रहा। कार्यक्रम का संयोजन पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ एवं निर्देशन पण्डित जितेन्द्रजी राठी ने किया। नाटक के लेखक पण्डित संतोषजी साहू शास्त्री थे।

2. मुम्बई (अणुशक्तिनगर) : इस अवसर पर देश के प्रमुख वैज्ञानिकों एवं इंजिनियरों ने डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया के प्रवचनों का लाभ लिया। डॉ. टडैया ने कहा कि जन-जन को हर्षित एवं कल्याणकारी जयन्ती महापुरुषों की ही होती है, अत: हमें अपने बच्चों को प्रेरणा देना चाहिये कि वे इस योग्य बनकर जन मानस पर वीतरागता की छाप छोड़ें। इसीसमय श्री अविनाशकुमारजी टडैया ने बच्चों में अच्छे संस्कार सत्चारित्र एवं तीक्ष्ण बुद्धि हेतु शिविरों को आयोजित करने की अपील की, जिसे वहाँ की समाज ने स्वीकार करते हुये शिक्षण-शिविर लगाने की घोषणा की।

विद्वत्परिषद का राष्ट्रीय अधिवेशन

श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक एवं दक्षिण भारत इकाई का राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक 13 मई से 30 मई तक आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर कोल्हापुर (महा.) के अवसर पर रविवार, दि. 29 मई, 2005 को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा तथा विद्वत्परिषद ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित नवीनतम साहित्य का विमोचन भी किया जायेगा।

इसके पूर्व दिनांक 28 मई, 05 को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई एवं पताशे प्रकाशन संस्थान, घटप्रभा की ओर से श्री जिनचन्दजी शास्त्री को सम्मानित किया जायेगा।

दक्षिण भारत के समस्त सदस्य एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सम्माननीय सदस्य इस अवसर पर सादर आमन्त्रित हैं।

स्थान : श्री विवेकानन्द कॉलेज, नागाला पार्क, आर.टी.ओ. ऑफिस के पीछे, कोल्हापुर।

ह अखिल बंसल, प्रकाशन मंत्री

साधना चैनल पर डॉ.
हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन
प्रतिदिन प्रात: 6.35 बजे अवश्य सुनें
साधना चैनल आपके यहाँ न
आता हो तो श्री पंकज जैन (साधना
चैनल) से मोबाइल नम्बर
09312506419 पर सम्पर्क करें

ब्र. यशपालजी द्वारा धर्मप्रभावना

ब्र. यशपालजी जैन द्वारा दिनांक 1 व 2 अप्रैल, 2005 को मालेगाँव (वाशिम) में मार्मिक प्रवचन हुये। इसी अवसर पर पण्डित रतनचन्द भारिल्ल द्वारा लिखित एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा प्रकाशित जिनपूजन रहस्य नामक किताब के मराठी संस्करण का विमोचन किया गया। दिनांक 3 अप्रैल को शिरपुर (अंतरिक्ष पार्श्वनाथ) में तथा दिनांक 5 व 6 अप्रैल को वाशिम में भी आपके प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ। दिनांक 11 से 19 अप्रैल, 2005 तक इंडी (बीजापुर-कर्नाटक) में तीनों समय गुणस्थान पर प्रौढ कक्षा के माध्यम से विस्तृत विवेचन किया गया, जिसमें श्री डी.आर. शाह, डॉ. सतीश शाह एवं श्री कोटी गुरुजी का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

उपर्युक्त सभी स्थानों पर प्रवचनोपरांत ब्र. यशपालजी ने 13 मई से कोल्हापुर में आयोजित होनेवाले शिविर की जानकारी देते हुये साधर्मियों को पधारने का निमंत्रण दिया।

सम्पादकीय –

नींव का पत्थर

1 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

धन्य है वह नारी ......

जीवराज की कर्मकिशोर से बचपन से ही ऐसी घनिष्ठ मित्रता है, मानो उन दोनों का जनम-जनम का साथ रहा हो। जीवराज चेतन होकर भी अपने कर्तव्य पथ से भटका हुआ है और कर्मकिशोर जड़ होने पर भी अपने कर्तव्यपथ से कभी नहीं भटकता। वह अपने काम के प्रति पूरी तरह ईमानदार है, कर्तव्यनिष्ठ है।

यद्यपि जीवराज कर्मकिशोर का जनम-जनम का साथी है, दोनों में अत्यन्त घनिष्ठता है; परन्तु जीवराज यदि कोई अपराध करता है तो कर्मकिशोर उसे दण्ड देने से भी नहीं चूकता और यदि वह भले काम करता है तो उसे पुरस्कृत भी करता है, उसका सम्मान भी करता है और लौकिक सुखद सामग्री दिलाने में कभी पीछे नहीं रहता।

कोई कितना भी छुपकर गुप्त पाप करे अथवा भले काम करते हुए उनका बिल्कुल भी प्रदर्शन न करे तो भी कर्मकिशोर को पता चल ही जाता है। कहने को वह जड़ है; पर पता नहीं उसे कैसे पता चल जाता है, उसके पास ऐसी कौनसी सी.आई.डी. की व्यवस्था है, कौनसा गुप्तचर विभाग सक्रिय रहता है, जो उसे जीव की सब अच्छे-बुरे (पुण्य-पाप) कार्यों की जानकारी दे देता है?

एकबार जीवराज ने कर्मकिशोर से पूछ ही लिया ''मित्र! तुम कैसे विचित्र हो? जो बिना ज्ञान के ही जीवों के गुप्त से गुप्त पुण्य-पापों का भी पता लगा लेते हो? उनके सभी शुभ-अशुभ भावों को न केवल पता लगा लेते हो, उनके पुण्य-पाप के अनुसार उन्हें दण्डित और पुरस्कृत करने की व्यवस्था भी कर देते हो? यह बात मेरी समझ में अभी तक नहीं आई। क्या तुम इसका रहस्य बताओगे?''

कर्मकिशोर ने कहा ह्न ''शुभाशुभ भावों के अनुसार दण्ड विधान करने से जानने न जानने का कोई सम्बन्ध नहीं है। जानने को तो सर्वज्ञ भगवान भी सबकुछ जानते हैं; परन्तु वे किसी को दण्डित व पुरस्कृत नहीं करते; क्योंकि वे वीतरागी हैं न ! हमें भी कौनसा राग-द्वेष है, जो हम किसी का भला-बुरा करें।

जीव के शुभाशुभ परिणामों के अनुसार हम और तुम (जीवराज) स्वतः लोह-चुम्बक की भाँति परस्पर बंध जाते हैं और हमारे उदय में अनुकूल-प्रतिकूल संयोग स्वतः ऑटोमेटिक-बिना किसी के मिलाये ही मिलते-बिछुड़ते रहते हैं।

जीवराज स्वयं अपने ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव और अपने कार्य की सीमाओं को भूलकर दुःखों के बीज बोता है, अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मारता है। यदि वह चाहे तो अपनी अनंतशक्तियों को पहचान कर, अपने स्वभाव की सामर्थ्य को जानकर हमारे बन्धन से मुक्त होकर सदा के लिए सुखी हो सकता है। हम किसी को बिना कारण बलात् बन्धन में नहीं डालते। हमारा किसी से कोई वैर-विरोध नहीं है।

कर्मकिशोर ने अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हुए आगे कहा ह्न ''यद्यपि हमें दुष्ट कहकर कोसा जाता है। भोले भक्तों द्वारा भगवान से प्रार्थना की जाती है कि 'हे प्रभो! इन दुष्टकर्मों को निकाल दो और हमारी रक्षा करो।'' हम पर मिथ्या आरोप लगाया जाता है कि हम जीवों को परेशान करते हैं। हमारे विरुद्ध भजन बना-बनाकर ऐसा प्रचार किया जाता है कि ह्न

''कर्म बड़े बलवान जगत में पेरत हैं''

एक भक्त ने तो यहाँ तक कह डाला ह्न

मैं हूँ एक अनाथ, ये मिल दुष्ट घनेरे।
किये बहुत बेहाल सुनिये साहिब मेरे।।

जबकि वस्तुस्थिति इससे बिल्कुल भिन्न है।

ह्न ह्न ह्न

सेठ जीवराज के पहले पूर्वभव में किए सत्कर्मों के फलस्वरूप कर्मकिशोर ने सेठ की रुचि के अनुकूल सभी लौकिक सुख-सामग्री जुटाने में कोई कमी नहीं रखी। उसे किसी से राग-द्वेष तो है नही। जीवराज ने यदि पूर्व में सत्कर्म किये थे तो उनका फल तो उसे मिलना ही था, सो ही मिला है। हम तो निमित्त मात्र बनते हैं। इस कारण भी सेठ जीवराज को अपनी मनोकामनायें पूर्ण करने में कभी/कोई बाधा नहीं हुई।

यद्यपि ये विषय भोगों की सब सुख सुविधायें भी पूर्वकृत सत्कर्मों के फलस्वरूप ही मिलती हैं, परन्तु उन प्राप्त भोगों में उलझ जाने से व्यक्ति का भविष्य अंधकारमय भी हो जाता है। यह विवेक जीवराज को नहीं था। इस कारण वह विषयान्ध हो गया और ऐसी ही कुछ स्थिति जीवराज की बन गई। पूर्व पुण्योदय से उसे समस्त भोग सामग्री और उसके मनोनुकूल 'मोहनी' भी मिल तो गई; परन्तु उसमें उलझने से उसकी जो दुर्दशा हुई, वह किसी से छिपी नहीं रही।

मोहनी के मोहजालों में फंस कर वह सातों व्यसनों में पारंगत हो गया। उसका सौभाग्य दुर्भाग्य में बदल गया। समता जैसी सर्वगुण सम्पन्न पत्नी के होते हुए भी वह व्यसनों और विषय-कषायों के जाल में ऐसा फंसा कि निज घर की सुध-बुध ही भूल गया।

दिन-रात नृत्य-गान देखना-सुनना, सुरापान करना आदि उसकी दिनचर्या के अभिन्न अंग बन गये। 'मोहनी' भी जीवराज से इतनी आकर्षित हो गई कि उसने अपने पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आये देहव्यापार के धन्धे को तिलांजलि देकर अकेले जीवराज से ही नाता जोड़ लिया। मोहनी के संसर्ग से जीवराज के ममता, माया, अनुराग, हास्य, रति आदि अनेक अवैध संतानें हो गईं। वे सभी संतानें मोहनी जैसी माँ के कुसंस्कारों के कारण कुपथगामी होकर जीवराज के गले का फन्दा बन गईं।

जिस तरह पुण्योदय से प्राप्त मिष्ठान्न खाते-खाते पापोदय आ जाने से जीभ दांतों के नीचे आ जाती है, उसी तरह जीवराज के पूर्व पुण्योदय से प्राप्त भोगों को भोगते-भोगते पाप का ऐसा उदय आया कि उसकी दुनियाँ ही पलट गई।

किसी ने ठीक ही कहा है कि ह्न **''सबै दिन जात न एक समान।''** विषयभोगों में मग्न सुख-सुविधा भोगी जीवराज के अल्पकाल में ही दुर्दिन

आ गये। उसे अनेक रोगों ने घेर लिया। जवानी में ही जब जीवराज का यौवन क्षीण हो गया और दुर्व्यसनों के कारण लक्ष्मी ने भी नाराज होकर जीवराज से मुँह मोड़ लिया तो मोहनी भी उसकी उपेक्षा एवं अनादर करने लगी।

जीवराज की स्थिति सांप-छछुंदर की तरह हो गई। कहते हैं कि सांप द्वारा छछुंदर का शिकार करते समय यदि वह छछुंदर उसके गले में अटक जाती है, तो उसके निगलने पर सांप का पेट फट जाता है और उगलने पर वह अंधा हो जाता है। यही दशा जीवराज की हो गई।

इन सब परिस्थितियों को देख-देख जीवराज अपने किए पर बहुत पछताया। अब उसे अपना भविष्य घोर अंधकारमय लगने लगा। वह कुछ समझ ही नहीं पा रहा था कि 'अब मैं क्या करूँ'।

यद्यपि अब उसे अपनी पूर्व पत्नी समता की बहुत याद आ रही थी परन्तु वह यह सोचकर सहम जाता कि ''अब मैं उसे अपना मुँह कैसे दिखाऊँ?''

ह्व ह्व ह्व

समता बहुत ही सुशील, सरल स्वभावी, क्षमाशील, धैर्यवान और विवेकी नारी है। वह दूरदर्शी भी बहुत है। पति के ऐसे असह्य अक्षम्य अपराध करने पर भी वह विचलित नहीं हुई, क्रोधानल में नहीं जली। मोहनी जैसी नारी के प्रति ईर्ष्यालु नहीं हुई। तत्त्वज्ञान के बल पर उसने स्वयं को तो संभाला ही, परिजनों को भी धैर्य बंधाया और जीवराज के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए यह सोचकर आशान्वित बनी रही कि 'परिणामों की स्थिति सदा एकसी नहीं रहती।'

यद्यपि ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में विरले ही सहज-सामान्य रह पाते हैं; परन्तु उसके जीवन में यह धर्म का ही प्रभाव था, जिससे वह अत्यन्त विषम परिस्थितियों में भी सहज रह सकी। अन्यथा कषायों के वशीभूत होकर व्यक्ति कैसे-कैसे अनर्थ कर बैठता है, यह किसी से छुपा नहीं है।

समता को अपने दुःखमय जीवन से अधिक चिन्ता जीवराज के अमूल्य मानव भव व्यर्थ बर्बाद होने की थी। अतः वह कामना करती थी कि ''किसी भी तरह इनकी ये दुष्प्रवृत्तियाँ दूर होना चाहिए और इन्हें आत्महित में लगना चाहिए; अन्यथा इनका यह अमूल्य मानव जीवन यों ही चला जायगा। कविवर दौलतरामजी ने ठीक ही कहा है ह्व

''यह मानुषपर्याय, सुकुल सुनवो जिनवाणी।
इह विध गये न मिले, सुमणि ज्यों उदधि समानी।।

यदि यह मनुष्य पर्याय इसी तरह काम-भोग करते-करते बीत गयी तो पुनः मिलना असंभव नहीं तो महादुर्लभ तो है ही।''

यह पढ़ते-सुनते हुए भी सारा जगत मोहनींद में ऐसा बेसुध है कि उसे अपने हित की कुछ खबर ही नहीं है।

जब समता को यह पता चला कि मोहनी जीवराज की उपेक्षा करने लगी है और उन्हें नाना प्रकार दुःख देने लगी है। बच्चे भी आवारा हो गये हैं। जिस पर उन्हें बहुत गर्व था वह लक्ष्मी भी जीवराज से रूठ गई है। जो कुछ कमाई की थी, उसमें से अधिकांश तो मोहनी की चौखट पर ही चढ़ गई। रही-सही यार लोग सुरापान में पी गये। जब बीमारी के इलाज की समस्या आई तो सभी दोस्त कन्नी काट गये।

समता ने देखा कि जीवराज अब दीन-हीन और असहाय हो गये हैं। उसे विचार आया कि ह्व ''ऐसा न हो कि वे निराश होकर आत्मघात कर लें। अतः उनकी खोज-खबर तो लेना ही होगी; अन्यथा कुछ भी अनर्थ हो सकता है। न केवल पति के नाते; बल्कि मानवता के नाते भी तो ऐसे लोगों का सहयोग करना अपना कर्तव्य है।'' ह्व ऐसा सोचते-विचारते उसके मन में उन पर दया आ गई। उसका हृदय द्रवित हो गया।

उसने सोचा ह्व ''सुबह का भूला यदि शाम को भी सही ठिकाने पर आ जाता है तो वह भूला नहीं कहलाता।''

कुछ लोग प्रथम श्रेणी के ऐसे समझदार होते हैं कि दूसरों को ठोकर खाते देख स्वयं ठोकर खाने से बच जाते हैं। दूसरी श्रेणी में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो स्वयं ठोकर खाकर सीखते हैं तथा तीसरी श्रेणी के कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो ठोकरों पर ठोकरें खाते हैं, फिर भी नहीं सीखते, संभलते ह्व ऐसे लोगों को कोई नहीं बचा सकता।

''हमारे जीवराज प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण तो नहीं हो पाये; पर मुझे विश्वास है और आशा है कि वे दूसरी श्रेणी में तो उत्तीर्ण हो ही जायेंगे। अतः मैं उनसे मिलूँगी और बिना कुछ क्रिया-प्रतिक्रिया प्रगट किए, बिना कोई कम्पलेन्ट एवं कमेन्टस किए, उनके अहं को ठेस पहुँचाये बिना, उनकी मान मर्यादा का पूरा-पूरा ध्यान रखते हुए उन्हें पुनः घर वापिस लौटने हेतु विनम्र निवेदन करूँगी। उनसे कहूँगी ह्व ''कोई बात नहीं, आप भूत को भूल जाइए गल्तियाँ होना मानवीय कमजोरी है, जो यदा-कदा अच्छे-अच्छों से भी हो जाती हैं।''

वह जीवराज से मिली, उन्हें देखते ही उसका गला भर आया, कंठ रुंध गया। उसने जो कुछ सोचा था, कुछ भी नहीं कह सकी। जीवराज भी अपनी करनी पर इतना पश्चाताप कर चुके थे कि उनके सारे पाप पहले ही पश्चाताप की आग में जलकर खाक हो गये थे, रहे-सहे अश्रुधारा में बह गये।

जिस तरह सोना आग में तपकर कुन्दन बन जाता है, जीवराज भी पश्चाताप की ज्वाला में तपकर कुन्दन की तरह पवित्र हो गया था। आंखों ही आंखों में जीवराज और समता पुनः बिना किसी कंडीशन (शर्त) के एक आदर्श पति-पत्नी के रूप में शेष जीवन जीने के संकल्प के साथ वापिस निज घर लौट आये।

सुखद संयोग में जीवन यापन करते हुए उनके दो संतानें हुई। पुत्र का नाम रखा विराग और पुत्री का नामकरण किया ज्योत्सना। ''दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंक कर पीता है'' इस लोकोक्ति के अनुसार जीवराज और समता ने अपनी दोनों सन्तानों को प्रारंभ से ही ऐसे सदाचार के संस्कार दिए ताकि वे सन्मार्ग से न भटक सकें।

जीवराज अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में जब स्वयं सही रास्ते से भटक गये थे और मोहनी से उनके जो संतानें हुईं। वे सब उनकी ही लापरवाही से सन्मार्ग से भटके थे। अतः उन्होंने सोचा 'अब तो प्रत्येक ह्व नया कदम सोच-समझ कर ही उठाना होगा।'और उन्होंने ऐसा ही किया। **(शेष पृष्ठ-7 पर ..)**

हमारे गौरव

1. श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के प्रान्तीय उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसादजी जैन उदयपुर एवं फैडरेशन के प्रदेश प्रतिनिधि श्री जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर को दि. जैन महासमिति महिला संभाग उदयपुर द्वारा अपने स्थापना दिवस के अवसर पर एक भव्य समारोह में पुलिस महानिरीक्षक श्री वी.के. गोदीका के करकमलों से शाल-प्रशस्तिपत्र व श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके द्वारा किये गये सामाजिक व धार्मिक कार्यों की सेवा के फलस्वरूप दिया गया है।

2. डडूका (राज.) : पण्डित रितेश जैन को बांसवाडा में संकुलस्तर पर बालिका शिक्षक सम्मान समारोह में बालिकाओं में शिक्षा के प्रचार-प्रसार, नामांकन, ठहराव एवं जन जातीय क्षेत्र में संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार में दिये गये योगदान को देखते हुये प्रतीक चिन्ह एवं प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक हैं तथा वर्तमान में लोधागाँव-बांसवाडा में मिडिल स्तर के विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

उक्त सभी को जैनपथप्रदर्शक की ओर से हार्दिक बधाई !

ऋषभ जयन्ती पर विधान एवं शोभायात्रा

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री आदिनाथ दि. जैनमंदिर केशवनगर में ऋषभ जयन्ती के अवसर पर सम्मेदशिखर विधान का आयोजन किया गया। विधान के पश्चात् जिनेन्द्र शोभायात्रा निकाली गई। इस अवसर पर विधानादि के कार्य डॉ. महावीरप्रसादजी द्वारा सम्पन्न कराये गये।

पंचपरमेष्ठी एवं प्रवचनसार विधान सम्पन्न

1. सोलापुर (महा.) यहाँ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ दि.जैन कासार मंदिर में 19 व 20 मार्च को पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी आलंदकर एवं पण्डित विक्रांतजी शाह के प्रवचन का लाभ मिला। रात्रि में बाल कक्षा, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित प्रशांतकुमारजी मोहरे ने कराये। इसीसमय वी.वि. पाठशाला की परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कृत किया।

2. श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर में अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर दिनांक 24 से 27 मार्च, 2005 तक प्रवचनसार विधान का आयोजन हुआ। इस प्रसंग पर पण्डित जिनचन्दजी आलमान हेरले एवं पण्डित राजकुमारजी आलंदकर सोलापुर के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन एवं विधि-विधान के कार्य पण्डित विजयकुमारजी कालेगोरे, पण्डित विक्रांतजी शास्त्री एवं कु. ऋजुता व कु. पूजा ने कराये।

वैराग्य समाचार

गोहाटी निवासी श्रीमती उमराव देवी ध.प. स्व. श्री मिश्रीलालजी बाकलीवाल का दिनांक 3 अप्रैल, 2005 को शांतपरिणामपूर्वक कोलकाता में देहावसान हो गया है। आप धर्मपरायण विदुषी महिला थीं। आपने अपने जीवन का अन्तिम समय तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में रहकर धर्मध्यानपूर्वक व्यतीत किया। आप श्री मोहनलालजी सेठी गोहाटीवालों की बड़ी बहिन थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 501/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो ह्न यही मंगल भावना है।

आवेदन पत्र आमंत्रित

1. श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान आत्मार्थी ट्रस्ट द्वारा अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र में संचालित विभिन्न गतिविधियों में से '**आचार्य अकलंकदेव शिक्षण एवं शोध संस्थान**' एक प्रमुख गतिविधि है ।

संस्थान में जैनदर्शन विषय के साथ न्यूनतम 60 प्रतिशत अंकों सहित शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण छात्रों को जैनदर्शन/प्राकृत विषय के साथ आचार्य की परीक्षा हेतु दिल्ली के लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) में प्रवेश दिलाया जाता है, जहाँ डॉ. सुदीप जैन, डॉ. वीरसागर जैन, डॉ. जयकुमार उपाध्ये एवं डॉ. अनेकान्त कुमार जैन के सान्निध्य में छात्र अध्ययन करते हैं।

आचार्य अथवा एम.ए. परीक्षा उत्तीर्ण छात्र यहाँ रहकर शोध कार्य भी कर सकते हैं साथ ही भविष्य में छात्रों को रोजगार संबंधी समस्या न हो; अत: उन्हें अतिआवश्यक कम्प्यूटर एवं अंग्रेजी की शिक्षा नि:शुल्क प्रदान कराई जाती है। छात्रों के आवास, भोजन एवं शिक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था ट्रस्ट की ओर से नि:शुल्क है। इच्छुक छात्र 31 मई, 2005 तक निम्न पते पर सम्पर्क करें ह्न

आचार्य अकलंकदेव शिक्षण एवं शोध संस्थान
'अध्यात्मतीर्थ', आत्मसाधना केन्द्र, घेवरा मोड़, रोहतक रोड,
नई दिल्ली-41, फोन नं. 28351203, 28351289

2. श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वा. मंदिर ट्रस्ट, द्रोणगिरि द्वारा सिद्धायतन में जुलाई-2003 से नवोदित योग्य प्रतिभावान छात्रों के सांस्कृतिक, धार्मिक एवं लौकिक विकास हेतु कक्षा 6 से 10 मे पंचवर्षीय पाठ्यक्रम के रूप में शिक्षण सुविधा नि:शुल्क प्रदान करने हेतु श्री समन्तभद्र शिक्षण संस्थान प्रारंभ किया गया है।

इस वर्ष भी जुलाई 2005 में कक्षा 5 की परीक्षा उत्तीर्ण योग्यताधारी छात्र को कक्षा 6 में मैरिट लिस्ट के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा। छात्रों को लौकिक शिक्षा प्राप्ति की सुविधा स्थानीय शासकीय माध्यमिक शाला द्रोणगिरि में दिलाई जायेगी। साथ ही धार्मिक एवं सांस्कृतिक विकास हेतु निश्चित पाठ्यक्रमानुसार शिक्षण प्राप्ति की सुविधा सिद्धायतन में ही आदरणीया डॉ. वासन्तीबेन शाह मुम्बई के वात्सल्यपूर्ण मातृत्वस्नेहपूर्वक पण्डित श्री कोमचन्दजी टडा के संरक्षण में अन्य योग्य विद्वानों द्वारा दिलाई जायेगी।

छात्रों के आवास, भोजन एवं सभी प्रकार के शिक्षण आदि की सुविधा नि:शुल्क होगी। प्रवेश पाने हेतु दिगम्बर जैन धर्मानुयायी इच्छुक छात्र दिनांक 15 मई, 2005 तक निम्न पते पर आवेदन करें। **ह्न मस्तांई प्रेमचन्द जैन,**
समन्तभद्र शिक्षण संस्थान, मु.पो. द्रोणगिरि, जिला-छतरपुर (म.प्र.)

शिविर सम्पन्न

देवलाली (महा.) : यहाँ दिनांक 26 मार्च से 30 मार्च, 2005 तक श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल खण्डवा से ससंघ तीर्थवन्दना एवं सत्संग हेतु लगभग 125 मुमुक्षु भाई बहिन पधारे।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा 20 तीर्थंकर विधान की जयमाला पर विशेष प्रवचन हुये। साथ ही पण्डित हेमचन्दजी हेम, पण्डित मन्नूलालजी जैन सागर, पण्डित मधुकरजी जैन जलगांव, पण्डित ज्ञायक जैन एवं डॉ. इन्द्रकुमारजी खण्डवा द्वारा प्रौढ कक्षायें ली गई।

उक्त कार्यक्रम में गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन का भी लाभ मिला।

पाठशाला निरीक्षण सम्पन्न

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अनिलकुमारजी बेलोकर सुलतानपुर द्वारा महाराष्ट्र में कलमनुरी, मुलावा, उमरखेड, हर्षी, पुसद, दिग्रस, बेलोरा, अनसिंग, महान, जवला (पलसखेड), सिंदखेड (मोरेश्वर), भामदेवी, बालापुर, वाढोणा (रामनाथ), साखरा, घाटबोरी, केकतउमरा, शिरडशहापुर, पिंपलदरी, पानकनेरगांव, वसमतनगर, परभणी, आनंदनगर, सेलु, वालूर चारठाणा, रिसोड, अंजनी (खुर्द), डोणगांव, मालेगांव की पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया।

इन स्थानों पर निष्क्रिय तथा बंद पाठशालाओं को सक्रिय तथा पुनर्स्थापित किया गया। सभी स्थानों पर प्रवचन, प्रौढकक्षा, भक्ति के अतिरिक्त पण्डित द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों की विस्तृत जानकारी समाज को दी गई। गतिविधियों की नियोजनबद्धता एवं तत्त्वप्रचार-प्रसार के लिये समर्पित इस ट्रस्ट का समाज द्वारा आभार व्यक्त किया गया। **ह्न ओमप्रकाश आचार्य**, प्रबंधक, पाठ. समिति

होली की छुट्टियों में अध्यात्म की धूम

रतलाम से होली के प्रसंग पर श्री निर्मलजी गोधा एवं पण्डित पदमकुमारजी अजमेरा के संयोजकत्व में 50 यात्रियों का एक दल श्री बावनगजा सिद्धक्षेत्र की वंदना के लिये गया। तीन दिवसीय इस यात्रा में उज्जैन के पण्डित विमलदादा झांझरी एवं पण्डित प्रदीपजी झांझरी के भक्तिपूजन के साथ क्षेत्र की वंदना एवं उनके आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही ऊन-पांवागढ़ के दर्शन का भी लाभ मिला। दिनांक 4 अप्रैल को पण्डित अजमेराजी के साथ 14 यात्रियों का एक दल मंगलायतन तीर्थ के दर्शन हेतु गया यहाँ दो दिनों तक पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया एवं पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर के प्रवचनों का लाभ लेकर पण्डित दौलतरामजी की जन्मस्थली एवं छहढाला ग्रन्थ की रचनास्थली सासनी, अन्तिम केवली अनुबद्ध केवली जम्बूस्वामी की सिद्धस्थली मथुरा एवं श्री महावीरजी में दर्शन-पूजन का लाभ लिया। इसप्रकार होली से नववर्ष तक अध्यात्म की धूम रही। **ह्न जम्बूकुमार पाटोदी**

.... यहाँ से काटकर या फोटो कापी कराकर शीघ्र भेजें। ....

साधना चैनल पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन : आपके सुझाव

ख्यातिप्राप्त आध्यात्मिक प्रवक्ता डॉ. हुक्मचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के प्रवचन साधना चैनल पर प्रतिदिन प्रात: 6.35 से 7.00 बजे तक विगत 8 माह से अनवरत रूपसे प्रसारित हो रहे हैं। जिसके माध्यम से अनेक साधर्मी भाई-बहन लाभान्वित हो रहें हैं। इसका एक डाटा बेस तैयार करने हेतु हमने निम्नांकित फारमेट तैयार किया है। आप इस फारमेट को भरकर प्रवचन प्रसार योजना, द्वारा अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर शीघ्र ही भेजने की कृपा करें, ताकि हम इस कार्यक्रम को और भी व्यवस्थित एवं सुंदर रूपसे संचालित कर सकें ह्न

1) साधना चैनल आपके यहाँ आता है या नहीं ?..

2) यदि नहीं तो क्यों ? कारण स्पष्ट करें ?..

3) क्या आप नियमित प्रवचनों का लाभ लेते है ? या कभी-कभी ?..............................

यदि नियमित लाभ नहीं लेते तो क्यों ?..

4) प्रवचन प्रसारण का समय क्या होना चाहिये ? प्रात: 6 से 7 के मध्य या रात्रि 10 से 11 के मध्य ?................

5) प्रवचन का विषय कैसा है ? ठीक/ सामान्य/कठिन ....

6) प्रवचन में अन्य कौन-कौन से विषय सम्मिलित किये जा सकते है ?..............................

..

7) आपके यहाँ प्रवचनों का लाभ लेने वालों की संख्या ह्न

पुरुष .... महिला................अन्य.............. कुल.......।

8) प्रवचनों के सम्बन्ध में आपकी राय एवं सुझाव ह्न

..

..

..

..

नाम...................................... पिता/पति का नाम ....

पता..

ग्राम........................ तहसील ....जिला ....राज्य...............

पिनकोड.......................... फोन नंबर (एस.टी.डी कोड सहित) ....

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार

27

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

जो एक द्रव्य के द्रव्य-गुण-पर्याय हैं एवं उनका जो अस्तित्व है, वह स्वरूपास्तित्व है। जितने पदार्थ लोक में हैं; उन अनंत पदार्थों में इसीप्रकार का अस्तित्व है। इसप्रकार अस्तित्व अस्तित्व में समानता है। इस समानता के आधार पर, महासत्ता के आधार पर, उनमें एकता की कल्पना करना ही सादृश्यास्तित्व है। इसप्रकार समानता के आधार पर जो एकता है वह सादृश्यास्तित्व है।

हम तुम एक से हैं, इसलिए यहाँ आचार्यदेव 'एक हैं' ह्न ऐसा कह रहे हैं। उस सादृश्यास्तित्व के आधार पर हम सब एक हैं ह्न ऐसा जानकर यदि कोई स्त्री-पुत्रादिक में अपनत्व करता है तो वह मिथ्यादृष्टि है। स्वरूपास्तित्व का ज्ञान करके, उसमें एकत्वबुद्धि को जोड़े बिना, उसी के समान जो दूसरी वस्तुएँ हैं, उनमें एकत्व करना मिथ्यात्व है।

स्वरूपास्तित्व अर्थात् अपने द्रव्य-गुण-पर्याय के भीतर ही सत्ता होती है। सत्ता अर्थात् अस्तित्व गुण। जो उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य से सहित है, वही द्रव्य है, वही सत्ता है। यह सत्ता पृथक् से कोई अन्य चीज नहीं है।

अब यहाँ यह प्रश्न उपस्थित होता है कि वह सत्ता द्रव्य से भिन्न है या अभिन्न ?

भिन्नता दो प्रकार की होती है एक पृथकता एवं दूसरी अन्यता। पृथकता अर्थात् दो पदार्थ जुदे-जुदे हैं एवं अन्यता अर्थात् जिनकी सत्ता एक है तथा स्वभाव भिन्न हैं। जिनकी सत्ता पृथक् है, उनमें पृथक्ता होती है एवं जिनकी सत्ता एक है, उनमें अन्यता होती है।

हिन्दुस्तान व पाकिस्तान इन दोनों में पृथकता है एवं हिन्दुस्तान व राजस्थान तथा राजस्थान व मध्यप्रदेश इन दोनों में अन्यता है।

द्रव्य तथा गुणों के मध्य एवं द्रव्य तथा पर्याय के मध्य अन्यता होती है, पृथकता नहीं। दो द्रव्यों के मध्य पृथकता होती है, अन्यता नहीं। एक द्रव्यों की दो पर्यायों में अन्यता होती है, पृथकता नहीं। एक द्रव्य के दो गुणों में अन्यता होती है, पृथकता नहीं।

अब यहाँ विषय की स्पष्टता के लिए यह प्रश्न उपस्थित करता हूँ कि मेरा ज्ञानगुण एवं आपका दर्शनगुण इनमें पृथक्ता है या अन्यता है ?

यहाँ पृथक्ता है; क्योंकि इसमें मेरा ज्ञानगुण एवं आपका दर्शनगुण लिया है। यदि यहाँ मेरा ही दर्शनगुण एवं मेरा ही ज्ञानगुण लेते तो अन्यता होती। एक द्रव्य गुण पर्याय में जहाँ मात्र भाव से ही भिन्नता होती है एवं द्रव्य-क्षेत्र व काल से अभिन्नता होती है, वहाँ अन्यता है। ज्ञान का जाननेरूप भाव है एवं दर्शन का देखनेरूप भाव है ह्न इसप्रकार भावों में भिन्नता है।

कई लोग अन्यता और पृथकता में अंतर नहीं जानते तथा चाहे जहाँ/ चाहे जैसा प्रयोग करते हैं।

मैं देह से इसलिए पृथक् हूँ; क्योंकि देह व आत्मा ह्न ये दो पृथक्-पृथक् द्रव्य हैं। राग से आत्मा इसलिए अन्य है; क्योंकि इसमें दो द्रव्य नहीं है।

पृथक्त्व का और अन्यत्व का लक्षण निम्नांकित गाथा में आचार्य स्पष्ट करते हैं ह्न

पविभत्तपदेसत्तं पुधत्तमिदि सासणं हि वीरस्स।
अण्णत्तमतब्भावो ण तब्भवं होदि कधमेगं।।१०६।।

(हरिगीत)

जिनवीर के उपदेश में पृथक्त्व भिन्नप्रदेशता।
अतद्भाव ही अन्यत्व है तो अतत् कैसे एक हों।।१०६।।

विभक्तप्रदेशत्व पृथक्त्व है ह्न ऐसा वीर का उपदेश है। अतद्भाव अन्यत्व है, जो उसरूप न हो वह एक कैसे हो सकता है ?

जिनके प्रदेश भिन्न हैं, उनमें पृथक्त्व है और जो अतद्भाव है, उसे वीरशासन में अन्यत्व कहा गया है।

अन्यत्व हो वहाँ एक हो सकते हैं; परंतु पृथक्त्व में एक नहीं हो सकते हैं।

अतद्भाव है सो अन्यत्व है। कथंचित् सत्ता द्रव्यरूप नहीं है एवं द्रव्य सत्ता नहीं है; अत: वे एकरूप नहीं है। द्रव्य व सत्ता में पृथक्ता नहीं है, अन्यता है। वह अन्यता भी कथंचित् है। कथंचित् दोनों एक हैं एवं कथंचित् दोनों अलग हैं। टीका में आचार्यदेव ने स्पष्ट लिखा है कि ह्न 'विभक्तप्रदेशत्व पृथक्त्व का लक्षण है। वह तो सत्ता और द्रव्य में सम्भव नहीं है।'

यहाँ पृथक्ता इसलिए संभव नहीं है; क्योंकि सत्ता व द्रव्य के प्रदेश एक हैं।

ध्यान देने की बात यह है कि 'भिन्नता' शब्द का प्रयोग पृथकता और अन्यता ह्न इन दोनों के स्थान पर खुलकर समान रूप से किया जाता रहा है; अत: यह ध्यान रखना बहुत जरूरी है कि भिन्नता का अर्थ प्रकरण के अनुसार किया जावे।

अब, आगे आचार्य विस्तार से इस बात को सिद्ध करेंगे कि सत्ता व द्रव्य में अन्यता है, पृथकता नहीं है। उत्पाद भी सत् है, व्यय भी सत् है एवं ध्रौव्य भी सत् है। तीनों यदि सत् हैं तो तीनों में तीन सत् हैं या दो सत् हैं या एक सत् है ?

अस्तित्व नामक जो गुण है, वह तीनों में एकसा है, उन तीनों में एक ही अस्तित्व गुण है। वस्तुत: इनमें तीन सत् नहीं है, एक ही सत् है।

सत् के अंश को भी सत् कहा जाता है; इसलिए उत्पाद भी सत् है, व्यय भी सत् है एवं ध्रौव्य भी सत् है। जो सत्ता उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य ह्न इन तीनों में व्याप्त है, वही सत्ता द्रव्य में व्याप्त है।

जो प्रदेशों और पर्यायों में व्याप्त रहे, उसे गुण कहते हैं। प्रदेशों और पर्यायों में व्याप्त होने से सत्ता गुण है। इसप्रकार जो गुण-पर्यायों की सत्ता है; वह ज्ञान व दर्शन की भी सत्ता है।

हम कहते हैं कि ज्ञान का अस्तित्व है, दर्शन का अस्तित्व है; इसप्रकार अनंत गुणों का अस्तित्व है। यह ऐसी विचित्र बात है कि अनंत का अस्तित्व होकर भी सम्पूर्ण अस्तित्व मिलाकर एक ही है।

गुरुदेवश्री ने ४७ शक्तियों को समझाते हुए यह कहा है कि सत्तागुण का रूप सब में है; जिसकी वजह से वह सब में है। सत्ता तो स्वयं से सत्तास्वरूप है। शेष सभी गुण सत्ता का रूप उनमें होने से सत्तास्वरूप हैं। ज्ञान का अस्तित्व है, चारित्र का अस्तित्व है। उनमें अस्तित्व गुण का रूप होने से सभी गुणों का अस्तित्व है।

सत्ता प्रतिसमय होनेवाले उत्पाद व व्यय में स्थित है। सत्ता प्रत्येक द्रव्य, गुण एवं पर्यायों में व्याप्त है।

अब प्रकरण यह है कि सत्ता प्रत्येक द्रव्य में व्याप्त है; परंतु हमारी सत्ता व अन्य द्रव्य की सत्ता पृथक् है ह्न इसका क्या आशय है ?

सत्ता प्रत्येक द्रव्य में है, इसमें सत्ता नामक जाति की विवक्षा है एवं जो पृथक् है ह्न ऐसा कहा इसमें सत्ता नामक शक्ति की विवक्षा है।

सब द्रव्यों में सत्ता नामक गुण है; परंतु आत्मा के सभी गुणों में सत्ता नामक एक ही गुण है। आत्मा की सभी पर्यायों में एक ही सत्ता गुण है। इसप्रकार सादृश्यास्तित्व व स्वरूपास्तित्व के अंतर को समझना।

स्वरूपास्तित्व नामक जो सत्ता है, वह एक ही है। वह हमारे सम्पूर्ण द्रव्य, गुणों में व्याप्त होती है; लेकिन सादृश्यास्तित्व नामक जो अस्तित्व है ह्न ऐसी वह महासत्ता सभी द्रव्यों में व्याप्त है। वह एक नहीं है, अनेक है। आचार्य ने जाति के अपेक्षा उसे एक है ह्न ऐसा कहा है ।

इसे ही टीका में अमृतचन्द्राचार्य उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट करते हैंह्न

'विभक्तप्रदेशत्व पृथक्त्व का लक्षण है। वह तो सत्ता और द्रव्य में सम्भव नहीं है; क्योंकि गुण और गुणी में विभक्तप्रदेशत्व का अभाव होता है ह्न शुक्लत्व और वस्त्र की भाँति।'

सफेद वस्त्र और सफेदी का अस्तित्व है; परन्तु क्या दोनों भिन्न हैं ? यदि दोनों भिन्न होते तो सफेदी को ले जाने के बाद भी वस्त्र की सत्ता होनी चाहिए। शरीर के परमाणु व आत्मा इनका अस्तित्व भिन्न-भिन्न है। शुक्लत्व अर्थात् शुभ्र व वस्त्र की भाँति शरीर के परमाणु यहीं पड़े रह जाते हैं और आत्मा चला जाता है।

वह इसीप्रकार है कि जो शुक्लत्व के गुण व प्रदेश हैं; वे ही गुण व प्रदेश वस्त्र के हैं; इसलिए उनमें प्रदेशभेद नहीं हैं।

इसीप्रकार जो सत्ता गुण के प्रदेश हैं, वे ही गुणी द्रव्य के प्रदेश हैं; इसलिए उनमें प्रदेशभेद नहीं है। ऐसा होने पर भी सत्ता व द्रव्य में अन्यत्व है। सत्ता व द्रव्य में अन्यत्व लक्षण ह्न 'अतद्भाव' पाया जाता है; इसलिए उनमें अन्यत्व है; क्योंकि गुण व गुणी में तद्भाव का अभाव होता है शुक्लत्व व वस्त्र की भाँति।

'वह इसप्रकार है जैसे चक्षु इन्द्रिय के विषय में आनेवाला व एक अन्य इन्द्रियों के विषय को गोचर न होनेवाला शुक्लत्व गुण है; वह समस्त इन्द्रिय समूह को गोचर होनेवाला ऐसा वस्त्र नहीं है।'

टीका की इन पंक्तियों के माध्यम से आचार्य कह रहे हैं कि सफेदी व वस्त्र दोनों में फर्क यह है कि सफेदी मात्र चक्षुइन्द्रिय के गोचर हैं, जबकि वस्त्र चक्षु इन्द्रिय सहित समस्त इन्द्रियों के गोचर है। ●

(पृष्ठ-3 का शेष .....)

यह तो बहुत अच्छा हुआ, जो उन्होंने अपने शेष जीवन को सात्विकता से जिया; परन्तु वे अभी भी अतीन्द्रिय आनन्द की अनुभूति करने से वंचित ही हैं; क्योंकि अब तक उन्हें उस अतीन्द्रिय आत्मिक आनन्द पाने के लिए जिस अन्तर्मुखी उपयोग की आवश्यकता होती है, वह उपयोग जिन कारणों या साधनों से अन्तर्मुखी होता है, वे साधन उनके पास नहीं हैं।

अन्तर्मुखी उपयोग करने का एकमात्र उपाय **वस्तु स्वातंत्र्य की यथार्थ समझ और श्रद्धा ही है;** क्योंकि वस्तु स्वातंत्र्य के ज्ञान-श्रद्धान बिना अन्य के भले-बुरे करने का भार निरन्तर बना रहता है।

हम अनादिकाल से अपनी मिथ्या मान्यता के कारण ऐसा मानते आ रहे हैं कि ''मैं दूसरों का भला-बुरा कर सकता हूँ, दूसरे भी मेरा भला-बुरा कर सकते हैं। इसकारण हम निरन्तर दूसरों का भला या बुरा करने तथा दूसरे हमारा बुरा न कर दें इस चिन्ता में आकुल-व्याकुल बने रहते हैं। इनके कर्तृत्व के भार से निर्भार नहीं हो पाते।''

''जब हम वस्तु-स्वातंत्र्य के सिद्धान्त के माध्यम से यह समझ लें कि न केवल प्रत्येक प्राणी; बल्कि पुद्गल के प्रत्येक परमाणु का परिणमन भी स्वाधीन है, किसी भी जीव के सुख-दुःख का कर्त्ता-हर्त्ता कोई अन्य नहीं है, क्योंकि प्रत्येक वस्तु स्वतंत्र है, स्वाधीन है, स्वसंचालित है।''

ऐसी जानकारी और श्रद्धा के बिना हम पर के कर्तृत्व के भार से निर्भार नहीं हो सकते और निर्भार हुए बिना हमारा उपयोग अन्तर्मुखी नहीं हो सकता तथा अन्तर्मुखी हुए बिना आत्मा के अतीन्द्रिय आनन्द और निराकुल सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। अतः सर्वप्रथम 'वस्तु स्वातंत्र्य' के इस नैसर्गिक नियम को जानना और उस पर विश्वास करना बहुत जरूरी है, जिसका ज्ञान व श्रद्धान अभी तक जीवराज को नहीं हुआ। इसकारण अब वह सात्विक जीवन जीते हुए भी सच्चे सुख से वंचित ही रहा।

जीवन के अन्तिम क्षणों में भली होनहार से जब वह वस्तु-स्वातंत्र्य के सिद्धांत की श्रद्धा के माध्यम से परकर्तृत्व के भार से निर्भार होकर अन्तर्मुखी हुआ और आत्मानुभूति के साथ सच्चे निराकुल सुख का स्वाद लेकर तृप्त हुआ तो उसके मन में बड़ी तेजी से यह विकल्प उठा कि ''मेरे बेटा-बेटी इस सुख से वंचित न रह जाँय। मैं उन्हें भी यह सब बता दूँ;'' परन्तु तब तक उसकी शारीरिक स्थिति बे-काबू हो गई। उसे अनायास लकवा लग गया। चाहते हुए भी वह अपनी संतान को उस अनुपम निधि की विधि नहीं बता पाया। इसलिए तो किसी ने कहा है ह्न

''काल करन्ता आज कर, आज करन्ता अब।
पल में परलय होयगा, बहुरि करेगा कब।।''

यद्यपि जीवराज लकवा की स्थिति में बोल नहीं सकता, लिख भी नहीं सकता था; परन्तु उसकी समझ यथावत थी, समझ में कोई अन्तर नहीं आया था, सोचने की शक्ति भी पूर्ववत थी, इस कारण जीवन के अन्तिम पड़ाव पर बीमारी के पूर्व उसे जो वस्तुस्वातंत्र्य का महामंत्र मिल गया था, उसके चिन्तन एवं अनुशीलन की आँच से उसने अपने जीवनभर के सम्पूर्ण कर्तृत्व के अहंकार को पिघला दिया। आधि-व्याधि एवं उपाधि का त्यागकर समाधि की साधना करते हुए अपना जीवन सार्थक कर लिया। ●

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

सार समाचार

➔ बांडुंग (जकार्ता) सम्मेलन की 50 वीं वर्षगांठ पर एशिया-अफ्रीका शिखर सम्मेलन में भारत को एशिया क्षेत्र के प्रतिनिधित्व करने का अनूठा सम्मान मिला।

➔ राजस्थान प्रदेश के अधिकांश जिलों में अत्यधिक फ्लोराइड एवं नाइट्रेट युक्त प्रदूषित पानी पीने के कारण जनता अनेक बीमारियों की शिकार।

➔ भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी द्वारा 24 अप्रैल को जयपुर में न्यू सांगानेर रोड ओवर ब्रिज का लोकार्पण किया गया।

➔ केन्द्रीय रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव पर चारा घोटाले में आरोप तय।

➔ भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को अमेरिका की सुप्रसिद्ध पत्रिका टाईम ने विश्व के 100 प्रतिभाशाली व्यक्तियों में सम्मिलित किया।

➔ बॉलीवुड के सुपरस्टार अमिताभ बच्चन एवं सुप्रसिद्ध पार्श्वगायक मन्ना डे को फिल्म एवं संगीत में योगदान के लिये दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

➔ आचार्य महाप्रज्ञ को भारत सरकार ने शांति सद्भावना पुरस्कार हेतु नामांकित किया।

➔ दिनांक 21 अप्रैल को वाराणसी से अहमदाबाद की ओर जा रही साबरमती एक्सप्रेस का समलया स्टेशन पर सिग्नल मैन एवं पैट मैन की गलती के कारण हादसा हुआ।

➔ भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान सौरभ गांगुली को धीमी ओवर गति के कारण छह मैचों के लिये प्रतिबंधित किया गया।

➔ भाजपा सांसद मेनका गांधी ने राजस्थान में निरंतर घट रही बाघों की संख्या के लिये चिन्ता व्यक्त की। इसके लिये उन्होंने मुख्यमंत्री वंसुधरा राजे पर वन्य जीव विरोधी कदम उठाने का आरोप लगाया।

➔ संस्कृत में बन रही मुद्राराक्षसम् फिल्म में भाजपा विधायक नाथूसिंह सम्राट चन्द्रगुप्त की भूमिका निभा रहे हैं।

➔ मशहूर तमिल लेखक डी. जयकान्तन को 38 वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया जायेगा।

➔ रा. मा. विद्यालय सागवाडिया, बांसवाडा के प्रधानाध्यापक श्री सुशीलकुमार जैन को शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिये राजस्थान दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रीय समरसता स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया।

➔ जम्मूतवी ऊधमपुर रेल लाईन राष्ट्र को समर्पित।

➔ चैत्र शुक्ल एकम् से प्रारंभ हुए इस नव वर्ष (अप्रैल माह) में ऋषभदेव जयंती, रामनवमी, महावीर जयंती, हनुमानजयंती, गुड फ्रायडे, चेटीचण्डजी का जन्मोत्सव, ईद आदि समस्त धर्मों के मुख्य पर्व पूरे देश में धूम-धाम से मनाये गये।

➔ अ. भा. वैश्य महासम्मेलन द्वारा आयोजित दिनांक 19 से 25 अप्रैल तक योग शिविर में डॉ. पीयूष त्रिवेदी द्वारा लिखित योगासन एवं प्राणायाम पुस्तक का विमोचन योगाचार्य स्वामी रामदेवजी द्वारा किया गया। इसी अवसर पर आयुर्वेद एवं एक्यूप्रेशर के चिकित्सक डॉ. त्रिवेदीजी का सम्मान किया गया।

उड़ीसा राज्य में प्रथम जैन संग्रहालय

कटक : उड़ीसा राज्य के सांस्कृतिक मंत्रालय के पुरातत्त्व विभाग की ओर से कटक जिला अन्तर्गत प्रतापनगरी में दि. 16 फरवरी को श्री दामोदर राऊत पंचायती राज व पर्यटन संस्कृती मंत्री उड़ीसा सरकार के करकमलों से राज्य के प्रथम जैन संग्रहालय का उद्घाटन हुआ।

इस संग्रहालय में स्थानीय ग्रामीणों के द्वारा संग्रहीत 8-10 वीं सदी की प्रतिमाओं का संग्रह किया गया है। **ह्न नरेश सबलावत**

सप्तम बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

देवलाली (नासिक-महा.) : यहाँ श्री दि. जैन मुमुक्षु समाज बृहन्मुम्बई के तत्त्वावधान में श्री अ. भा. जैन युवा फैडरेशन जवेरी बाजार, मुम्बई द्वारा आयोजित एक मुमुक्षु भाई हस्ते ब्र. चेतनाबेन देवलाली के सहयोग से दिनांक 20 से 27 अप्रैल, 2005 तक सप्तम आध्यात्मिक बाल शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित संजयजी जैन अलीगढ, पण्डित ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद, ब्र. ललिताबेन भिवण्डी, ब्र. चेतनाबेन देवलाली, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, कु. जयन्ती शाह मुम्बई एवं पण्डित ज्ञायक जैन अलीगढ आदि विद्वानों द्वारा प्रौढ एवं बाल कक्षा का आयोजन किया गया।

नन्हे-मुन्ने बच्चों हेतु विशेष कक्षायें

13 मई से 30 मई,05 तक कोल्हापुर में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर बालकों के लिये विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है। जिसकी संयोजिका डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई रहेंगी। अत: आप सभी अपने बच्चों को कोल्हापुर अवश्य भेजें।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

08 से 12 मई 05	**भायंदर-मुम्बई**	**पंचकल्याणक प्रतिष्ठा**
13 से 30 मई 05	**कोल्हापुर (महा.)**	**प्रशिक्षण-शिविर**
02 जून से 28 जुलाई	**विदेश**	**धर्म प्रचारार्थ**
31 जुलाई से 9 अगस्त	**जयपुर**	**शिक्षण-शिविर**
1 से 7 सितम्बर	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) मई (प्रथम) 2005

J. P. C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा,**डबल एम.ए. जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127